

संसत्त-निज्जुत्ति

प्रधान संपादकः

प० प० आ० भ० श्री० विजय विक्रमसूरी

सम्पादकः

श्रीमान् ज्ञानचन्द्रः

प्रेरकः

प० प० प० प्र० श्री नवीनविजयजी गणीवर शिष्य

मुनिप्रवर श्री हिरण्यप्रभविजयजी म०

प्रकाशकः

श्री लघुसूरीश्वरजी स्मारक संस्कार केन्द्र

मुम्बापुरी

प्रकाशकः—

श्री लघिसूरीश्वरजी स्मारक संस्कार केन्द्र; बीरला मेन्शन,
प्रार्थना समाज, बम्बई—४; की ओरसे
भीमान् कस्तुरचंद बी० जव्हरी, प्रधानमंत्री.

सर्वाधिकार सुरक्षित

श्री लघिसूरीश्वरजी स्मारक संस्कार केन्द्र

प्रथम संस्करण सन् १९६५

विक्रम संवत् २०२२

मुद्रक :—

बलदेवदास
संसारप्रेस, संसार लिमिटेड,
काशीपुरा; वाराणसी.

प्रधान संपादकीय

निवेदन

श्री मूर्तिपूजक श्वेताम्बर जैन सम्प्रदाय निर्युक्ति, चूर्णि, भाष्य, टीका सहित आगम को मान्य मानता है। आगम-साहित्य गहन होने से उनपर पहले निर्युक्तियाँ लिखी गयी, फिर निर्युक्तियों को स्पष्ट करने के लिए चूर्णि और फिर भाष्य और टीकाएँ। पू० आचार्य कुलमंडन सूरिजी ने आगम को स्पष्ट रूप में समझने के लिए विचारामृत-संप्रह में निर्युक्ति, भाष्य, संग्रहणी चूर्णि पंजिकादि का आश्रय लेने का विधान किया है।

आवश्यक सूत्र की निर्युक्ति में पू० श्रुतकेवली भद्रबाहुस्वामी म० ने निर्युक्ति की परिभाषा इस प्रकार बतायी है :

णिज्जुत्ता ते श्रुत्था जं बद्धा तेण होइ णिज्जुत्ती
तह विय इच्छावेद् विभासित् सुत्त परिवाडी ॥ ८८ ॥

१० निर्युक्तियाँ पू० श्रुतकेवली भद्रबाहु स्वामी जी म० की हैं—(१) आवश्यक (२) दशवैकालिक (३) उत्तराध्ययन (४) आचारांग (५) सूत्रकृतांग (६) दशाश्रुतस्कंध (७) कल्पसूत्र (८) व्यवहार (९) सूर्यप्रज्ञसि (१०) ऋषिभाषित।

इनमें सूर्यप्रज्ञसि तथा ऋषिभाषित की निर्युक्तियाँ अब उपलब्ध नहीं हैं। इनके अतिरिक्त ३ निर्युक्तियाँ और हैं : (१) पिंडनिर्युक्ति (२) ओघनिर्युक्ति तथा (३) संसक्त निर्युक्ति।

प्रस्तुत ग्रंथ जो आपके हाथ में है वह संसक्त निर्युक्ति है। इस निर्युक्ति में स्वयं कहा गया है कि, यह दूसरे पूर्व पर आवृत है। द्वादश अंगों का

बारहवाँ अंग दृष्टिवाद अब लुप्त हो गया है। उसमें पूर्व १४ थे। और, उनमें से यह निर्युक्ति दूसरे पूर्व अग्राणीय पर आधारित है। संमूच्छम जीवों की उत्पत्ति, किन परिस्थितियों में होती है, इसका विवेचन इस निर्युक्ति में किया गया है तथा बताया गया है कि, कैसा भोज्य पदार्थ जैन-साधु को स्वीकार्य होता है। इसमें यह भी बताया गया है कि, कैसा भोज्य पदार्थ जैन-साधु को अस्वीकार्य हो जाता है। प्रस्तुत ग्रन्थ में नेपाल, द्राविड़ तथा सौराष्ट्र देश के नाम भी आये हैं।

अभी तक यह संसक्त निर्युक्ति अप्रकाशित रही। मुझे इसकी एक प्रेस-कापी विद्या-विनोद श्री ज्ञानचन्द्र जी के पास मिली। आशा है, जैन-जगत् इसे स्वीकार करेगा और जैन संस्कारों से अपरिचित लोग इसे देखकर यह अनुमान लगा सकेंगे कि, जैन-समुदाय जीव-दया अथवा अहिंसा का पालन कितनी जागरूकता से करता है।

आचार्य विक्रमसूरि,



पूज्य आचार्य भगवंत

श्री० विजय लघिसूरीश्वरजी महाराज

गुजरातना बालशासन गामे पितांबरदास अने माता
मोतीबानी कुखे जन्म्या पुत्र लालचंद । पू० गुरुदेव सद्गर्मसंरक्षक
कमलसूरीश्वरजी महाराजना सदुपदेशो, जिनना अनुपम मार्गे विचरी,
मुनि लघिविजय नामे जैन आल्ममां विख्यात थया । अपूर्व गुरुशूश्रूषा
करी अथाग ज्ञानार्जन कर्यु । ज्ञान अने त्यागना उपासके पृथ्वी परिकम्मा
शब्द करी; अखिल भारतनां गामडे गामडे फरी जिननो संदेशो पहोचाड्यो ।
अहिंसाना आ दैवी दूते पंजाबमां, मुल्तानमां कसाइओना क्रूर पाप
छोडाव्या । सत्य सिद्धांतना अजोड प्रेमी, ते महापुरुषे नास्तिको सामे,
परमतवादी सामे सिंहगर्जना करी, भौतिकवादनी भूतावलमां भूला भमता
जीवोने मेघगंभीर नादे देशना आपी अध्यात्मना अमृत पाया । विलासना
विकारी युगमां “पिया बिन पडत नही चैन” बोलनार युवकोने भक्तिरसनां
अपूर्व खजानासम काव्यवारसो आप्यो ।

अति उच्च प्रकारनी नम्रता अने सिद्धांत प्रत्येनी एकनिष्ठा निहाली
गुरुदेवे विं० सं० १९८१ मां छाणी गामे (गुजरात) आचार्यपदथी
विभूषित कर्या ।

पू० आचार्यदेवश्री विजयलघिसूरीश्वरजी महाराजे अध्यात्म
संस्कृतिना प्रचारार्थे अनेक पुरुषार्थ कर्या । सरस्वतीना परम उपासकोने
हिन्दी-गुजराती-उर्दु-पंजाबी साहित्यनो रथसाल आप्यो ।
छेल्ले महाकाय द्वादशार-नयचक्र ग्रंथनुं संशोधन-संपादन करी

જગતને એક અત્યુત્તમ ગ્રન્થરલનની મેટ ધરી; જેનું ઉદ્ઘાટન ભારતના આજના રાષ્ટ્રપતિ ડૉ સર્વપલલી રાધાકૃષ્ણનના હસ્તે મુખ્ય (દાદર) ખાતે થયું હતું। પૂજ્યશ્રીઓએ કરેલ શાસનસેવાના કાર્યોની સુત્તિ-ગુણાનુવાદ માટે કલમ અધુરી જ પડે ।

શાસનની રક્ષા, શાસનની સેવામાં જીવન વીતાવી, જિન-શાસનમાં લયલીન બની અપૂર્વ સમાધિપૂર્વક પૂર્ણ ગુરુદેવ વિં સં ૨૦૧૭ માં મુખ્યમાં સ્વર્ગવાસ પામ્યા ।

પૂર્ણ ગુરુદેવ વીસમી સદીના અપ્રતિમ અને અજોડ મહાપુરુષ હતા । ગુણાનુરાગ, પરમ મैત્રીભાવ, અજોડ વિદ્વત્તા અને અપૂર્વ ચાદ-શક્તિના સ્વામિ હતા । શાસનના ચરણે અનેક ઉમદા ગ્રથરલનોની, વિશાળ કાવ્યોની, સાધનાની જીવંત મૂર્તિસમા શિષ્યોની તૈમળે મેટ ધરી છે । સુરિદેવના શિષ્યો જ્ઞાની, ધ્યાની, તપસ્વી, ઉચ્ચ સંયમી અને સિદ્ધાંતના અનેરા પ્રેમી છે ।

જન્મયા કર્મથી, જીવ્યા જનકલ્યાણ કાજે, મૃત્યુને ભેટ્યા
મોક્ષ કાજે ।



नूतन आचार्य...

श्री० विजय जयंतसूरीश्वरजी महाराज

गुजरातना डभोई शहेरे एक गर्भश्रीमंत कुडम्बमां, पिता फुलचंद-भाई अने माता दिवालीबेनना कुखे जीवणकुमारे जन्म लीधो। मोजशोख अने विलासी वातारणमां युवानवयमां पू० गुरुदेव श्री० विजय लघ्बिसूरीश्वरजी महाराजनी दिव्य देशनाना अमृत सरोदो सम्भलाया। युवाननी दिशा पलटाई। जीवनमां विरागना, अध्यात्मना पगरण मंडाया। एक धन्य दिने बोरसद मुकामे जई पू० गुरुदेवनां चरणमां ल्यलीन बन्या। पंचमहाब्रितनुं मंगल दान पामी जयंतविजय नामे पू० मुनि जयंतविजय महाराजे गुरुदेव पासे संस्कृत, आगमिक तथा आध्यात्मिक अच्युतन कर्यु। ज्ञाननी भक्ति, ज्ञानीना वचन प्रत्ये सम्पूर्ण श्रद्धा, गुरुदेव प्रत्येनी अंतरंग प्रीति। गुरुकृपा अने ज्ञान वडे स्व अने परना आत्मामां रहेल क्षतिओने दूर करवा प्रयत्न कर्यो। युवानोने प्रतिबोधता अद्यतन शौलीअे काव्यो सर्ज्या। जिननां चरणे आत्मानुं तर्पण धर्यु। तप अने क्रियामां सदा अप्रमत्त जिन दर्शने थाक, भूख, तरस बधुं विसरे; अने प्रमुभक्तिमां लीन बने। आवा प्रभुभक्त !

उच्च प्रकारनी योग्यता जोअी पू० गुरुदेवे स्वहस्ते ईडरमां पन्यासपद आप्यु; अने क्रमे पंन्यासमांथी उपाध्यायपदे प्रतिष्ठित थया। पू० उषा-ध्यायजी महाराज अेटले सदा कार्यरत, अवधूत योगी, गुरुमांज पोतानुं सर्वस्व माननारा। आजीवन गुरुकुलवासमां रही गुरुनी भक्तिथी आत्मानी कमबख्त हरी, नीजानंदनी मस्तीमां महाली पू० गुरुदेवनी भक्ति साथे समुदायनी सारणा वारणा पण करे। साठ वर्षनी उमरे पण

ज्यारे तेओने श्रुतज्ञानना खमासमणा देतां जोअी आपणुं मस्तक नमी
पडे छे ।

आवा उच्च गुणना स्वामी पू० उपाध्याय जयंतविजयजी महाराजने
अने तेमना लघु गुरुवंधु पू० पं० विक्रमविजयजी महाराजने पू०
आचार्य देव श्री० भुवनतिलकसूरीश्वरजी महाराजे आचार्य पदथी
विभूषित कर्या ।

नूतन आचार्य श्री० जयंतसूरीश्वरजी महाराज युग्युग जीवो
अने जगतने कल्याणनो राह बतावो ।



पूज्य आचार्य भगवंत

श्री० विजय विक्रमसूरीश्वरजी महाराज

जिनना वेशथी सुशोभित काया, तत्वज्ञानी वाणी अने मोक्ष मोक्षः
झाँखी रहेला आ श्रेष्ठ मुनि छे ।

वडोदराथी पाँच माईल दूर छाणी गामे (गुजरात) भव्य जिन मंदिर,
जिनाज्ञानुरागी श्रावको । तैमां छोटालालभाई अने परस्पन्देनने सात
पुत्रो, त्रण पुत्री । पुत्र नगीनदास संयमना मार्गे पू० नवीनविजय
महाराजनां नामे गुरुदेवनी शीतल छायामां विचरे । सौथी नाना पुत्र
बालुने चौद वर्षनी बाल्यवयमां वैराग्य थयो । पिताने पण तैयार कर्या ।
पू० गुरुदेव लब्धिसूरीश्वरजी महाराजनी पावन छायामां चाणसा आव्या;
अने मातानी रजा लई संयमी बन्या । पिता मुक्तिविजय महाराज,
पुत्र विक्रमविजय महाराज, बने गुरुदेवना शिष्य बन्या ।

पू० मुनि विक्रमविजय महाराजे दीक्षाना दिनथीज ज्ञाननो यज्ञ
आरम्भी दीधो । पुस्तक अने गुरु शिवाय बीजुं कई न ईच्छे । ईच्छे ज्ञान
अने चिंतन, निदिध्यासन अने गुरु आज्ञा । संस्कृत, प्राकृत भाषा मेलवी
तैओभे अति दुर्गम न्यायमां प्रवेश कर्यो । कुशाग्र बुद्धि होवाथी न्यायमां
निष्णात बन्या । शास्त्रवांच्वननो नाद लाग्यो । शास्त्र वांचे अने आत्मविमर्श
करे । सिद्धांतनी निष्ठा अनेरी । गुरु अने गुरुआज्ञा सिवाय बीजुं नकामुं ।
आत्मी प्रबल मान्यता । रोमे रोममां गुरु वसी गयेला । शिष्यने गुरु गमे
पण आ तो गुरुदेवनां हैयामां वसी चुकेला विनयी शिष्य । प्रकांड विद्वत्ता
उच्च संयम अने जिनाज्ञाना संपूर्ण उपासक मुनि विक्रमविजयने पू०
गुरुदेवे स्वहस्ते सिद्धक्षेत्रमां (पालीताणा) पन्यासपदथी विभूष्या ।

पू० पंन्यासजी महाराजनी आपूर्व साहित्य सेवा; कोई पण ग्रन्थनुं संशोधन संपादन करवा अहोनिश कलम तैयार; शास्त्रविधि, नंदीसूत्र, श्रेयांसनाथ चरित्र, मुनिसुब्रतस्वामी चरित्र, हरीश्वन्द्र कथानक आदि कथा ग्रन्थो, सिद्धहेम मध्यमवृत्ति, हैम धातुपारायण, पाइथलच्छी नाममाला, कुमार संभव, आगम, काव्य, कोशा, व्याकरण आदि ग्रन्थोनुं संपादन, संशोधन करी पू० गुरुदेवनी साथे द्वादशार नयचक्र ना संपादन संशोधनमां संपूर्ण साथ आयो । खूब विस्तृत ऐतिहासिक अने नैयायिक पद्धतिये द्वादशार नयचक्रनी प्रस्तावना लखी विद्वद्भजनोने मंत्रमुग्ध कर्या छे ।

वक्तृत्वशक्ति सुन्दर, तत्त्वज्ञाननी छाणावट पण सुन्दर, वैराग्यमयी देशना संभलावी अनेक आत्माओने तार्या । जिननां पावनमार्गे संचरवा प्रेर्या ।

आवा विशिष्टज्ञानी, उच्च संयमी, दीर्घ चारित्री पू० पं० महाराज पू० आचार्य श्री० भुवनतिलकसूरीश्वरजीनां वरदहस्ते पू० उपाध्याय महाराजनी साथे संगमनरेमां सं० २०११ नां वैशाख सुद ६ नां दिने सूरिपदथी विभूषित बन्या०

नूतन आचार्य श्री० विजय विक्रमसूरीश्वरजी महाराज पासे श्री० संघ अनेक महत्वाकांक्षाओ राखे छे । पू० गुरुदेवे ज्वलित करेली ज्योतने दिन प्रतिदिन बधु देदीयमान थती जोवाने ईच्छे छे ।



संसक्त-निजज्ञत्ति

उसभाइवीरचरिमे, सुरासुरनमंसिए पणमित्तणं ।
 संखेवउमहत्थं भणामि संसक्तनिजज्ञत्ति ॥ १ ॥
 बीयाओ पुच्चाओ अगोणीया इमं सुअमुआरं ।
 संसेइम-संमुच्छम-जीवाणं जाणित्तणंगं ॥ २ ॥
 समणेण संजमट्टा, णाणादेसेसु विहरमाणेण ।
 भुज्जाभुज्जं निच्चं, नायच्चं सच्च देसेसु ॥ ३ ॥
 कुसणाणि य चउसट्टी, कूरे जाणाहिं एगतीसं तु ।
 नव चेव पाणगाइं तीसं पुण खज्जया हुंति ॥ ४ ॥
 जं जंमि देस भागे, अकप्पियं होइ जेण कालेण ।
 बुच्छामि अब्रपाणे वि, कारणं सुतनिद्विं ॥ ५ ॥
 मगहेसु मगहसालीणं ओयणं उण्हयं हवइ भुज्जं ।
 सीअलयं तु अभुज्जं कुंथुतसाणं सा जोणी ॥ ६ ॥
 तेसिं तु तंदुलो [द] अं एगंतेण भवे अपिज्जं तु ।
 पिंडालु पल्लंका परिवुत्था सा वि हु अभुज्जा ॥ ७ ॥
 वालगा कोडिमित्ता, उरपरिसप्ता तहिं सुहुमदेहा ।
 संमुच्छंति अणेगे, दुष्पिकला मंसचकखूणं ॥ ८ ॥

तंमि य चेव यं देसे, जं उण्हं सालुअं हवइ भुज्जं ।
 सीयलंमि उ जलुआ, रसया मुच्छंति अ अणेगे ॥ ९ ॥
 सरिसवसागं मुग्गेहिं, मीसियं अंबिलेणं जं सिद्धं ।
 एगंतेण अभक्खं, तहिं मङ्कुका भवे सुहुमा ॥ १० ॥
 मासा मूलया सिद्धा, परिबुत्था संजयाण पडिसिद्धा ।
 मच्छा संमुच्छंती, रहरेणुसंठिआ बहवे ॥ ११ ॥
 सोवच्चल नालीआ जाता, तके छगणियाहिं सिद्धाओ ।
 परिबुत्थंमि य विविहा, सब्बे पंचिदिया हुंति ॥ १२ ॥
 आमे तके सिद्धं, कुलुभसागं अकप्पियं निच्चं ।
 बालसरिसा अणेगे, सप्पा संमुच्छिमा तत्थ ॥ १३ ॥
 जवसागरनालं, परिबुत्थं नेव कप्पियं होइ ।
 संमुच्छंति अणेगे, मच्छं-जल्शगासहस्राइ ॥ १४ ॥
 एगंतेण अपेयं, खीरं दुर [य] जाययं तहिं देसे ।
 संसैइम तत्थ जिया, मङ्कुकलिया य संबुक्का ॥ १५ ॥
 दहिअं तिरिच्च बुत्थं अकप्पियं तं जलोअसंघायं ।
 गुलपाणियं अपेयं, पहरंमि गए तिहिं देसो ॥ १६ ॥
 मासोदगं अपेयं, अंडाउजीवसंभवो तत्थ ।
 जवपाणियं तु सेसाणिओ (?) उण्हतोयाणि ॥ १७ ॥
 यगंतेण अभक्खा, परिबुत्था मासपोलिया तत्थ ।

संमुच्छंति, - तओआ तहियं जीवा बहुविहाय ॥ १८ ॥

आलग पिंडग गम्भा, मंडुकलिआ य रत्तिपरिवुत्था ।

पुञ्चहे सा कप्पइ अवरहे तंतुआ जीवा ॥ १९ ॥

भक्खाय पंच रत्तं तु, मोअगीदेस (?) मंडले तंमि ।

एगंतेण न कप्पइ, सीअल कुसणो अ कूरो अ ॥ २० ॥

आयारे पडिसिद्धं, जीमंती सीअलं जइ उ भतं ।

आयारपरिब्भट्टो पाणवहकरो अ साहू अ ॥ २१ ॥

मूलगलट्टा-वत्थु आ तउ संसज्जए मुहुत्तेण ।

न हु मूलगसंपत्तं, कंदफलाइं तु संसत्ते ॥ २२ ॥

सब्बं तिलक्य आमग-गोरसमीसं तु रत्तिपज्जुसियं ।

लट्टा सीईभूआ, संसज्जइ सा मुहुत्तेण ॥ २३ ॥

अंबखलगत्तिक्यं, पत्तेयं मंति रत्तकालियं (?) ।

विज्जल-पणठ-पूइं, स्फङ्गमुहाई सुसंसज्जे ॥ २४ ॥

एवं भुजं पेजं मगहाविसए तए समासओ भणियं ।

मगहोवि य नायब्बो, जाव कलिंगाओ नेपालो ॥ २५ ॥

दविडंधयाण वासो, निय निय देसमंडले पत्ता ।

पाणाणि य भक्खाणि य, नायब्बाइं पयत्तेण ॥ २६ ॥

पूरिय कुडय कुमुंभा, कुंभाडिया अग्नि सिद्धका माई ।

एसा निगोअ जोणी परिवुत्था होइ हु अभक्खा ॥ २७ ॥

कुद्व-तंदुल-उदयं, कूरं तह पंचरत्ति परिवृत्थे ।
 एगंतेण अपेयं, जलचर चाइं जायंति ॥ २८ ॥

पूरिय मंडुकलिया, मासा चवला य सीयला जाया ।
 हुंति अभक्खा कुंथू, भक्षिखाय मसगाण सा जोणी ॥ २९ ॥

कुद्व-तंदुल-उदयं, कूरं तह पंच रत्तिपरिवृत्थं ।
 एगंतेण अपेयं, बहुविहसत्ताण सा जोणी ॥ ३० ॥

गुलपाण्यं तु पेयं, मझहे घितुरिंदि पाणं चे ।
 सेसकालमपेयं, सेसाणि य जाइं पाणाइं ॥ ३१ ॥

आमीर सुरट्टाए, कुडगोछेलीय तक्क सिद्धोओ ।
 एगंतेण अभक्खो, सीओ उण्हो अ सलिलेण ॥ ३२ ॥

संमुच्छंति निअोआ, तसा य पंचिंदिया अणेगविहाणी य ।
 सुहुमा जाईहिं दिट्टा तज्जोणीआ य बहुजीवा ॥ ३३ ॥

स्त्रणं कंदो मासेहिं मीसिओ एगरत्ति परिवृत्थो ।
 एगंतेण अभक्खो, तस्सणिउ तत्थ मंडुक्का ॥ ३४ ॥

[तसा निगोया य मंडुक्का]

छागलतकेसिद्धो, छगणेहिं किन्दुकंगुओ जुओ ।
 बिल्करिल्लमीसो, परिवृत्थो तत्थ बहुउरगा ॥ ३५ ॥

पल्लेणमूलकंदा, अकप्पियसिद्धयावि इ निचंपि ।
 सत्तुकुसणाय वज्जा, सुरट्टामीरमज्जांमि ॥ ३६ ॥

चउहिं पयोरहिं सया, न कपर्हि कंगुओ तहिं देसे ।
जो अजयविलसिद्धो, तत्थ इमावन्निया जोणी ॥ ३७ ॥

[अंबीलो मिसीद्धो]

उन्हे संमुच्छंति निओअगोजीवा अणेगसंठाणा (?) ।
सीयलंमि य मच्छा, रहरेणूसंठिया बहवे ॥ ३८ ॥
छामलतके सिद्धो, कंगुओ खायरोहिं कड्हेहिं ।
उन्हे निओअजीवा, सीअलए तंतुआ जीवा ॥ ३९ ॥
तककंबिलं मिसिद्धो, मासुल्लणपयरपलल मीसंमि ।
उन्हंमि तसा जीवा, सीयलए हु निओआ ॥ ४० ॥
माहिसतके छगणंमि, सिद्धओ तत्थ कंगुओ होई ।
संमुच्छंति अणेगे, सीअलए तंतुया जीवा ॥ ४१ ॥
वल्लीपते तिल्लंमि, सिद्धए उन्हयंमि उरणिया ।
उप्पजंति अणेगा, सीअलए किन्हया जीवा ॥ ४२ ॥
अंबिल सिद्ध विराली, एगंतेषेव सावि पडिसिद्धा ।
उन्हंमि तसा जीवा, निओयजीवा य सीअए ॥ ४३ ॥
छागलतके सिद्धा, एगंतेणं च सावि पडिसिद्धा ।
तिलमासल्लूणमीसा निगो [न] पंचिंदिया कुंथू ॥ ४४ ॥
दोहीकीरल्लकोहलसमगं वज्जज्ज वच्छसंजोगे ।
भज्जअ दोहीकंकोडजोगए एसि नियमेण ॥ ४५ ॥

नालियरजलं कप्पूर, मीसिअं तत्थ आसिविसजीवा ।
 वत्थूल्ल छ्हाया शुद्धिङ्ग, दहि अइसुहुम वच्छे अ (?) ॥ ४६ ॥

नवशुद्धिउद्धि दुङ्ग, गारियामीस नवरं ।
 अंतोमुहुत्तमुवरि, तसाण जीवाणमुप्पत्ति ॥ ४७ ॥

तज्जाय उद्धियाए, नवदिण संसक्तयं तु गोदुङ्गं ।
 अंतोमुहुत्तमुवरि, तसाण जीवाणमुप्पत्ति ॥ ४८ ॥

पुंनोसालीपुरओ, असंठि उ होई तिन्निवि य कूरा ।
 परिहरिअब्बा निच्च, सीअलए तंतुया जीवा ॥ ४९ ॥

छागलतके सिद्धो, कुंगुओ खायेरहि कट्टेहि ।
 तिलमासलूणमीसो, निओअ पंचिदिआ कुंथू ॥ ५० ॥

निगंथाणामभक्खं, मूलगसागं तु रति परिवुत्थं ।
 कुंथु तत्थ निओआ, उपजजंती बहु अ जीवा ॥ ५१ ॥

[तसा य निगोया]

मासावि य परिवुत्था, एगंतेषै हुंति अभक्खा ।
 हुंति हु तंतुआजीवा, निओअ पंचिदिया तत्थ ॥ ५२ ॥

स तु अभक्खामभक्खा, परिवुत्था जे सुरड्डविसयंमि ।
 पोलामहुकुक्कडिया, पंचिदिअजीयजोणीसा ॥ ५३ ॥

एगं जामं भक्खा य, पूरिका कुंथू वा भवे पच्छा ।
 एगंतेण अभक्खा, परिवुत्था मासपोअलिआ ॥ ५४ ॥

उप्पज्जंति निओआ, जीवा पंचिदिया बहुविहा य ।
 दुवहेसु हसे मोअगेसु, परिवुत्थेसु तहिं देसे ॥ ५५ ॥

गोभत्त खाइयाण, गोणीण गोरसेण जं मीसं ।
 संसज्जइ रसएहिं खणेण वालगासरीसेहिं ॥ ५६ ॥

सब्बेसु वि देसेसु, परिवसिआई अकप्पणिज्जाई ।
 असणं पाण [१] भक्खं, नाणाजीवाण जोणी सा ॥ ५७ ॥

सब्बेसु वि देसेसु, सब्बेसुवि चेव तह य कालेसु ।
 कुसणेसु आमगोरस, - जुत्तेसु निओअ पंचिदी ॥ ५८ ॥

जो परिवुत्थं भुंजइ, एगयरं चेव दुविहमाहारं ।
 सो बहुविहजीवाण करेइ अंतं अयाणंतो ॥ ५९ ॥

अंकुल्घाणियाए, बीयालटीइ जो अ इक्षुरसो ।
 मच्छा संमुच्छंती तक्कालं सब्बदेसेसु ॥ ६० ॥

चउजोअण जलही, पच्चासन्ना य हुंति जे देसा ।
 उप्पन्नंमि य कज्जे घड्डेण जलं तु छाणिज्जा ॥ ६१ ॥

संसक्ता निजुक्ती, एसा साहूहिं चेव पठियव्वा ।
 अत्थो पुण सङ्क्षेहिं, विसोअब्बो साहुपासाओ ॥ ६२ ॥

जो ताही पडिवत्ती, नाणादेसेसु सुत्तभणिएण ।
 सो संजमं अविकलं, करेइ साहू परिहरंतो ॥ ६३ ॥

निवेदन

यह ग्रन्थ परमपूज्य अपार्थिव ज्योतिर्धर बहुश्रुत स्वर्गस्थ आचार्य भगवंत् श्रीमद्विजय लक्ष्मिसूरीश्वरजी महाराज के परम अंतेवासी शिष्यरत्न प० पू० उपाध्याय श्री जयंत विजयजी गणिवर तथा प० पू० पन्नास प्रवर श्री विक्रमविजयजी गणिवर के आचार्यपद प्रदान के निमित्त से प्रकाशित किया गया है।

इस ग्रन्थ की छपाई के लिए प० पू० पन्नास प्रवर श्री नवीन विजयजी गणिवर के शिष्य रत्न प० पू० मुनि प्रवर श्री हिरण्यप्रभ विजयजीस० के सहुपदेश से आर्थिक सहायता प्राप्त हुई है।

इस श्रुतोपसाधन के प्रकाशनार्थ उक्त मुनिवर से हमें जो सहायता मिली है, उसके लिए हम आभारी हैं।

इस प्रकाशन में हमें जिन-जिन व्यक्तियों से प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष सहायता मिली है, उन सबको हम धन्यवाद करते हैं।

श्री लक्ष्मिसूरीश्वरजी स्मारक
संस्कार केन्द्र बर्मवर्ड-४

‘विक्रम शिशु’
संस्थापक